नागवासुकि मंदिर और प्रयाग में नागपूजा की परम्परा

 सामान्यतया नाग और सर्प समानार्थी समझे जाते हैं परंतु गीता ने स्पष्टतया दोनों में विभेद माना है| विभूतियोग नामक दसवें अध्याय में कहा गया है कि मैं सर्पों में वासुकि हूँ—सर्पणास्मि वासुकि ||28||इसी तरह अगले श्लोक में लिखा है| मैं नागों में अनंत नामक नाग हूँ—अनंतश्चापि नागानां ||29|| वासुकि के साथ नाग शब्द प्रचलित है यथा नागवासुकि अतएव पौराणिक काल में यह अंतर प्रायः समाप्त हो गया |

 प्रागैतिहासिक युग में नाग-पूजा अपवाद रूप में ही मिलती है परन्तु आदिवासी जनजातियों में उसका व्यापक स्वरूप देखा जा सकता है| लोकगीतों और लोककलाओं में नाग जाति के संदर्भ वैसे ही सजीव दिखायी देते हैं जैसे भारतिय शिल्प में मनुष्याकार नागों और नागपूजकों का चित्रण एवं मूर्तन| लोक-कल्पना भी उन्हें केवल साँप नहीं मानती | “भय बिनु होइ न प्रीति” का सबसे अधिक लोक-ग्राह्य उदाहरण नागपूजा है जिसको प्रयाग का नागवासुकि मंदिर मध्यकालीन स्थापत्य के रूप में स्थापित करता है | प्राचीन मंदिर कब बना कितनी बार बना इसका कोई लिखित प्रमाण नहीं है पर नाग-नागी का एक सम्मूर्तन स्वयं इसका साक्षी है कि 10वीं शताब्दी के आस-पास एक प्राचीन मंदिर यहीं रहा होगा| उसी परम्परा का उद्धार करते हुए मराठास शासक श्रीधर भोंसले ने वर्तमान मंदिरका निर्माण कराया| कुछ लोग इसका श्रेय राघोवा को देते हैं| यह मंदिर सम्भवतः अट्ठारहवीं शती ईसवी से पहले का नहीं है क्योंकि इसकी शैली झूँसी के तिवारी मंदिर जैसी है | वासुकि नाग की मूर्ती,इस मंदिर की तुलना में अधिक प्राचीन लगती है| अद्वितीय है उसकी चतुर्वलयी लयात्मकता |

 मंदिर के पूर्व-द्वार की देहली पर शंख बजाते हुए दो कीचक बनें हैं जिनके बीच में लक्ष्मी का प्रतीक प्रतीक कमल दो हाथियों के साथ शिल्पित हैं | मुझे उसकी कलात्मकता सबसे अधिक आकर्षित करती है |नागवासुकि का विग्रह भी आकार-प्रकार में कम सुंदर नहीं है |भारतवर्ष में ऐसे मंदिर अपवाद रूप में ही मिलेंगे जिसमेन नाग देवता को ही केंद्र में प्रतिष्ठित किया गया हो |इस दृष्टी से नागवासुकि मंदिर असाधारण महत्ता रखता है पर आश्चर्य है कि उत्तर प्रदेश के सूचना विभाग द्वारा प्रकाशित अद्यतन पत्रक में उसका नाम तक नहीं लिया गया |

 नागपंचमी यह हरियाली तीज के दो दिन बाद सावन के महीने में ही शुक्लपक्ष में होती है और लोक में इसे ‘गुड़िया का मेला’ कहा जाता है | लड़कों द्वरा गुड़िया पीटने की प्रथा समाप्त हो गयी है उसका सही कारण भी लोगों को ज्ञात नहीं रहा | जब गंगा बढ़ी रहती हैं तो लोग नावों से वासुकिघाट पर आते हैं |प्रयाग के नागपंचमी का मेला विशेष माना जाता है | इसकी परम्परा महाराष्ट्र के पैष्ण तीर्थ से जुड़ता है जो नासिक की तरह गोदावरी के तट पर स्थित है | शताध्यायी में वासुकि-क्षेत्र एंव मंडल का वर्णन विशेष रूप से कियागया है और नागपंचमी का भी उसमें हुआ है | उत्तरार्ध अध्याय 85 के अनुसार वासुकि उत्तर में भोगवाती हद है जहाँ स्वर्ग से उतरी गंगा के वेग को शेषनाग ने धारण किया | यहीं से वे पाताल गयीं | भोगवती तीर्थ के स्नान दान का अक्षुण्य पुण्य होता है यह बात उसमें कही गयी है | दिवोदास शेषनाग के मित्र थे और उनके उपासक भी | उनके द्वारा की गयी स्तुति असाधारण साहित्यिक सौंदर्य रखती है | इस क्षेत्र का विस्तार तीस बांस है | “त्रिदश दण्डात्मक क्षेत्रम” जिसमें अनेक नागगण रहते हैं | “नाना नाग गणांवितम” | नागवासुकि के दक्षिण की ओर ब्रह्मकुण्ड है और दशाश्वमेध तीर्थ भी, जहाँ ब्रह्मा ने अनेक यज्ञ किये | वासुकि के अतिरिक्त नागलोक के विविध नागों के नाम पूर्वार्ध अध्याय 5में शताध्यायी में इस प्रकार उल्लिखित है—

 शेषोनंतश्च कपिलः कालियः शंखपालकः |

 कर्कोटक महापद्म धृतराष्ट्र धनंजयः ||

अन्यत्र शेषनाग ने स्वयं अपने स्थान(प्रजापति क्षेत्र) का परिचय देते हुए कहा है—जिसमें अनेक नागों के नाम आये हैं |

 आ प्रयाग प्रतिष्ठानोद्यत्पुरा वासके ह्र्र्दात्|

 कम्बलाश्वतारी नागौ नागस्य बहुमूलकः | महाभारत |

एक ओर भरद्वाज-आश्रम है तो दूसरी ओर प्रतिष्ठानपुरी और समुद्र कूप | बाँध बनने से पहले गंगा अबाध गति से भरद्वाज-आश्रम पहुँच जाती थी | हो सकता है यह मंदिर गंगा के बीच में द्वीप के रूप में रहा हो | सुगांग प्रासाद और सुयामुन प्रासाद अब विलीन हो गये |

 जैसे अक्षयवट कभी समाप्त नहीं होता वैसे शेषनाग भी अशेष बने रहते हैं | एक की कल्पना कालात्मक है तो दूसरे की दिशापरक अथवा देशपरक | वासुकि के पाँच फण पंचप्राणों के बोधक हैं प्राण या वायु ही सर्पों का आधार है | चारों दिशाएं चार वलयों के रूप में प्रदर्शित हैं |दो अतिरिक्त लघु वलय आकार रूप में पुच्छासन की कल्पना जगाते हैं |पातालपुरी के शेषनाग की प्रतिमा से यह प्रतिमा अधिक सुंदर है और प्राचीन भी,इसमें कोई संदेह नहीं | वहाँ दाँये-बाँये दो नागिनियाँ प्रदर्शित है पर यहाँ उनके स्थान पर चार नाग-नारी युग्म विभिन्न काम-दशाओं में सृष्टि के विकास-क्रम को द्योतित करते हैं | इन युग्मों के पीछे तांत्रिक विचारधारा कार्य करती दिखायी देती है | कोई आश्चर्य नहीं कि मध्यकाल में यह क्षेत्र तंत्रपीठ के रूप में माना जाता रहा हो | शेष सृजन-शक्ति के प्रतीक रहे हैं |एक प्राचीन शिल्प में नारी योनि से नाग का उदय दिखाया गया है| नागों के आठ कुल माने जातेहैं|जायसी ने ‘अस्टकुरी’ शब्द का प्रयोग किया है |नाग बहुतों के कुल देवता हैं जैसे गुरुवर डॉ. रामकुमार वर्मा के कुल में आदि देवता के रूप में पूज्य माने जाते हैं | नागपुर के आसपास का क्षेत्र भी नाग-पूजा का क्षेत्र रहा है और आश्चर्य नहीं कि मराठों में भी आरम्भ से नागपूजा प्रचलित रही हो |शिव के उअपासक प्रायः नागों के भी उपासक सिद्ध होते हैं | भारशिव नाम से प्रख्यात नाग भी शिवोपासक थे और कदाचित नाग-जाति से सम्बद्ध भी| मिर्जापुर के समीप कांतिपुरी ( कंतित नागों की प्रसिद्ध राजधानी रही अतएव नागवासुकि मंदिर का सांस्कृतिक एवं धार्मिक महत्व निर्विवाद है पर इसकी विधिवत खोज नहीं हुई है| ‘असिमाधव’

नागवासुकि के समीप बताये जाते हैं पर उनकी सही स्थिति कहाँ है, मुझे ज्ञात नहीं |

 कुम्भ-कथा में वासुकि दो रूपों में सहयक हुए | एक तो उन्होंने अपनी कुण्डली में समेट कर मंदराचल पर्वत को पृथ्वी से उखाड़ दिया जिससे वह मंथन का उपकरण बन सके दूसरे स्वयं उन्होंने अपने को नेति या नेती के रूप में प्रस्तुत कर दिया| समुद्र-मंथन की कल्पना ही मूलतः विराट्दृष्टि को अपने में समाहित करके रूपक रूप में उत्पन्न हुई है|इस विराटता को शेषनाग अपने में पूंजीभूत किये हैं | वे एक ओर शेषशायी विष्णु की शैया बनते तो भुजंगभूषण शिव के आभूषण कहे जाते हैं | गणेश भी उन्हें उपवीत बना लेते हैं | ब्रह्मा विष्णु की नाभि में रहते ही हैं | इस प्रकार त्रिदेवों का पूरा यश एवं समर्थन उन्हें मिला हिअ |शएष के साथ हरिहरात्मक भाव भी विकसित हुआ है | वासुकि और अक्षयवट पहले रूद्रोपासना से सम्बद्ध थे बाद में वैष्ण प्रभाव में आगये |इसका श्रेय त्रिवेणी तथा वेणीमाधव को है!

 अहि-माता का पद सुरसा,कद्रू और मंसा तीनों को मिला है दक्ष की दो कन्याओं के रूप में कद्रू का पौराणिक आख्यान विशेष प्रसिद्ध है | गरुड़ ने कुशों पर अमृत कलश रखा तो छलके हुए अमृत को चाटने के कारण सभी सर्प द्विजिह्व हो गये अर्थात सबकी जीभें बीच से कटकर दो हो गयीं | कुम्भ-कथा से यह ललित कल्पना भी जुड़ जाती है |

 जनमेजयके सर्प-सत्र से भी वासुकि का सम्बंध बनता है|उन्होंने अपनी बहन जरल्कारू से ब्याह दी जिससे आस्तीक का जन्म हुआ जिसने तकक्ष के प्राण बचाये |तक्षक के द्वारा ही जनमेजय के पिता परीक्षित का नाश हुआ| सर्प सम्बंधी उपाख्यानों का अंत नहीं| जैसे शेषनाग नामतः अनंत हैं,वैसे ही उनके चरित भी अनंत दिखायी देते हैं | प्रयाग क्षेत्र विषयक प्रसिद्ध श्लोक में वासुकि और शेष में अंतर माना गया है| छतनगा में शेष मुख्य है| शेष का स्वरूप लक्ष्मण और बलराम, जैन तीर्थ पार्श्वनाथ का स्मरण दिलाता है क्योंकि ये सभी सर्पछत्रधारी या पृथ्वीधारक माने जाते हैं | सर्पछत्र सौभाग्यसूचक माना जाता है और नागों का चिन्ह भी| एक अयोध्यावासी वृद्धा ने नागवासुकि मंदिर को जब लक्ष्मण जी का मंदिर कहा तो मैं चकित रह गया| सेज सहस्त्रसीस जग-कारन | सोंह अवतरियो भूमि भय टारन |

 आर्यसमाजी इस मंदिर की महत्ता स्वामी दयानंद जी से मानते हैं जो इसकी सीढ़ियों पर माघ सुदी 5,सं.1926 तदनुसार फरवरी 5,1870 ई. के कुम्भ मेले पर घोर शीत की कतिपय रातें काटी थी| 1983 ई. की दीपावली पर उनकी निर्माण शती की स्मृति में एक शिलालेख लगा दिया गया है जिसमें स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती ने मेरा नाम भी लिखा दिया है | अब एक वयोवृद्ध ज्ञानी सन्यासी श्री सदानंद सरस्वती कई दशकों से दण्डधारी रूप में ब्रह्म ज्ञान का उपदेश देते हैं|

 इस मंदिर का जीर्णोधार कुछ दशक पहले श्रीमती इंदिरा गाँधी के आगमन से हुआ था| स्व.पुरुषोत्तमदास टण्डन,कमलपति त्रिपाठी तथा सम्पूर्णानंद का भी योगदान स्मरणीय रहेगा| स्वर्गीय पुजारी बालगोविंद त्रिपाठी नेहरू-परिवार से घनिष्ठ रूप से सम्बद्ध थे | उन्होंने अपना उत्तराधिकार वासुकिशरण त्रिपाठी को देकर उनके नाम को सार्थक कर दिया |

 मण्डप के नीचे शर-शैया पर लेटे भीष्म पितामह का विशालकाय मूर्ति मंदिर के द्वार के समीप ही स्थित है| इसका निर्माण मेरे देखते-देखते में हुआ है| भीष्म गंगापुत्र माने जाते हैं, अतः एक मराठी गंगा भक्त ने इसे 1961 में लोकहित में समर्पित कर दिया |

 नागवासुकि मंदिर के वर्तमान प्रवेश-द्वार पर दायें-बायें पार्श्व में जो लेख शिलापट्ट पर उत्कीर्ण मिलते हैं वे इस प्रकार हैं—

 87 शेष गुणे 43 वासुकि मंडलं धनु प्रमाणं न्.स्नाने 44 कुडँ च प्रजनेभीष्ट सिद्धिर्पोत |

 अत्रासिमाधवः प्रज्य भोगवती तीर्थए निनान्य पना स्नाने भीष्टं |

इसमें कुछ अक्षर स्पष्ट नहीं हैं और कुछ चिह्नों का अर्थ नहीं लगता पर कुल मिलाकर असि-माधव और भोगवती कुंड को वासुकि मण्ड्ल से सम्बद्ध करके अभीष्ट सिद्धी के लिये स्नान-पूजन की बात धनु-प्रमाण का उल्लेख कर्ते हुए की गयी है | संख्याएँ निर्माण-काल का परिचय नहीं देती | तुलसीदास ने माधव,अक्षयवट और त्रिवेणी का तो उल्लेख किया है पर नागवासुकि तीर्थ का स्मरण नहीं किया| सम्भवतः यह मंदिर उनके समय नहीं बना था हो सकता है जीर्ण-शीर्ण अवस्था में उपेक्षित पड़ा रहा हो|

 ‘वृक्ष-पूजा’ के विषय में जेम्स फर्गुसन की प्रसिद्ध अंग्रेजी में है— ‘ट्री ऐण्ड सर्पेंट वर्शिप’ पर उनमें मुख्यतया साँची और अमरावती में प्राप्त उदाहरणों को प्रमुखता दी गयी है| अन्य क्षेत्र गौण माने गये हैं | नागपूजा पूरे संसार में मिलती है पर भारतवर्ष में नाग्जाति के कारण उसका विशेष महत्व हुआ| वर्तमान नागवसुकि मंदिर उसी परम्परा का श्रेष्ठतम जीवंत प्रमाण है | जैसे गौहाटी में नवग्रह-मंदिर ब्रह्मपुत्र के उत्तर तट पर स्थित है वैसे ही प्रयाग में नागवासुकी मंदिर भी गंगा के तट पर अलग स्थित दिखायी देता है| पक्के घात पर सीढ़ियों के ऊपर बनी बारादरी के कारण यह स्थान अधिक सुंदर लगता है, विशेषतः बाढ़ के समय |

 \*\*डॉ. जगदीश गुप्त